

स्वामी विवेकानंद, रवींद्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी का मॉडर्न और पोस्टमॉडर्न एजुकेशनल फिलॉसफी में योगदान

अंशिका सिंह^{1*}, डॉ. विनीता त्यागी²

1 शोधार्थी, श्री कृष्णा यूनिवर्सिटी, छतरपुर, म.प्र., भारत

ouriginal.sku@gmail.com

2 सह – प्राध्यापक, श्री कृष्णा यूनिवर्सिटी, छतरपुर, म.प्र., भारत

सार: यह पेपर भारत में मॉडर्न और पोस्टमॉडर्न एजुकेशनल फिलॉसफी में स्वामी विवेकानंद, रवींद्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी के अहम योगदान को दिखाता है। अलग-अलग ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों से उभरे इन तीन विचारकों ने ऐसे बदलाव लाने वाले विचार दिए जिन्होंने भारतीय शिक्षा की नींव रखी। विवेकानंद ने खुद को समझने, चरित्र निर्माण, नैतिक ताकत और जन्मजात पूर्णता के प्रकटीकरण पर ज़ोर दिया, और अपनी सोच को मॉडर्न मानवतावादी फिलॉसफी के साथ जोड़ा। टैगोर ने एक समग्र, प्रकृति-केंद्रित, क्रिएटिव और आध्यात्मिक रूप से आधारित एजुकेशनल विज़न पेश किया जिसने सख्त स्कूली शिक्षा को चुनौती दी और आज़ादी, बहुलता और खुद को व्यक्त करने के कई पोस्टमॉडर्न विचारों का अनुमान लगाया। गांधी ने आत्मनिर्भरता, सच्चाई और अहिंसा पर आधारित शिक्षा का एक बहुत ही नैतिक, समुदाय-आधारित, अनुभव पर आधारित मॉडल दिया, जिसमें ऐसे सिद्धांत शामिल थे जो मॉडर्न इंडस्ट्रियल सभ्यता की कंस्ट्रक्टिविस्ट और पोस्टमॉडर्न आलोचनाओं से पूरी तरह मेल खाते हैं। साथ में, उनकी फिलॉसफी भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं और मॉडर्न ग्लोबल सोच का एक गहरा मेल दिखाती हैं, जो आज की शिक्षा के लिए हमेशा रहने वाली समझ देती हैं। रिव्यू में बताया गया है कि आज की चुनौतियों जैसे कि मशीन से सीखना, मूल्यों की कमी, सांस्कृतिक दूरी, और सामंजस्यपूर्ण, समग्र मानव विकास की ज़रूरत को हल करने के लिए उनके विचार कैसे काम के हैं।

मुख्य शब्द: गांधी, टैगोर, शिक्षा, एजुकेशनल फिलॉसफी, अहिंसा, विवेकानंद

1. परिचय

भारत में इतिहास की शुरुआत से ही, आध्यात्मिक मूल्यों की खोज जीवन और सोच की खास बात रही है। जीवन के बारे में भारतीय नज़रिए ने हमेशा इंसान की दिव्यता, अस्तित्व की एकता और धर्मों और पंथों के तालमेल पर ज़ोर दिया है। भारत के ऋषियों और संतों ने बहुत पहले वैदिक धर्म के दो गुना रास्ते की खोज की और उसे समझाया, जो इंसान को हर तरह की खुशहाली और सबसे अच्छी आध्यात्मिक

भलाई की ओर ले जाता है। बहुत पुराने समय से भारतीय दार्शनिकों ने इंसानी सोच के क्षेत्र में समय-समय पर की गई अपनी शानदार खोजों को पूरी दुनिया को बताने की कोशिश की है। भारतीय दार्शनिक सोच को संक्षेप में इस तरह कहा जा सकता है। इंसान आत्मा में बसा है जो सबसे ताकतवर और सब कुछ जानने वाली है। इंसान की आत्मा दिव्य है; यह जन्म और मृत्यु से रहित है। जहाँ पश्चिम इंसान के स्वभाव के बारे में कमोबेश प्रैक्टिकल नज़रिए को मानता है, वहीं पूरब इसे नज़रअंदाज़ किए बिना यह महसूस करता है कि यह उसकी अकेली कीमत या उसका मुख्य मूल्य नहीं है, बल्कि उसकी असली कीमत मोक्ष पाने में है। बौद्ध धर्म ने जिस ब्रह्मांडीय मोक्ष के विचार पर ज़ोर दिया, उसे बाद में श्री अरबिंदो के दर्शन ने अपनाया और महसूस किया, जिन्होंने इस पर पूरब या पश्चिम के किसी भी दूसरे दार्शनिक से ज़्यादा ज़ोर दिया, लेकिन यह विचार स्वामी विवेकानंद, रवींद्र नाथ टैगोर और महात्मा गांधी की शिक्षाओं में भी दिखता है। अब शिक्षा के क्षेत्र में आते हैं, यह समस्या इंसान के स्वभाव की समस्या का ही एक हिस्सा है जो दर्शन से जुड़ी है। भारतीय शिक्षा जगत का योगदान [1]

स्वामी विवेकानंद: स्वामी विवेकानंद को शिक्षा के मॉडर्न फिलॉसफर में से एक माना जा सकता है। स्वामी विवेकानंद भारत के कल्चरल और स्पिरिचुअल इतिहास में एक पायनियरिंग हस्ती हैं। उन्होंने एक अहम समय में पुरानी भारतीय संस्कृति और ज्ञान को फिर से ज़िंदा करने और नया आकार देने की पूरी कोशिश की। उनके अनुसार, शिक्षा सिर्फ़ कुछ जानकारी हासिल करना नहीं है। असली शिक्षा वह है जो किसी को अपने पैरों पर खड़ा होने के काबिल बनाती है। जैसा कि उन्होंने कहा, शिक्षा परफेक्शन का रूप है, उनके लिए, 'शिक्षा वह है जिससे कैरेक्टर बनता है, बुद्धि बढ़ती है और जिससे कोई अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।' उन्होंने तर्क दिया कि ज्ञान इंसान में पैदाइशी होता है। कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं आता।

आधुनिकतावाद, उत्तर आधुनिकतावाद एवं उससे परे परिप्रेक्ष्य में विवेकानंद के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता

विवेकानंद इंसान और दुनिया की ज़रूरी एकता में यकीन करते थे। उन्होंने भारतीय स्पिरिचुअलिटी और वेस्टर्न मटेरियलिज़्म को एक करने की कोशिश की। उन्होंने परा विद्या और अपरा विद्या को भी एक किया। वे एजुकेशन के फील्ड में क्रांतिकारी थे और उन्होंने इसके हर पहलू को छुआ। एजुकेशन के अलग-अलग पहलुओं पर उनके विचार आज शायद उनके जीवनकाल की तुलना में ज़्यादा रिलेवेंट हैं और उनकी ज़्यादा ज़रूरत है। ओरिएंटल कल्चर में उनकी मज़बूत पकड़ थी, फिर भी उनमें इतनी समझ थी कि वे वेस्ट से उधार लेने लायक हर चीज़ का स्वागत कर सकें (घोषाल 2012)।

विवेकानंद ने एजुकेशन को 'इंसान में पहले से मौजूद परफेक्शन का मैनिफेस्टेशन' के तौर पर बताया। सबसे पहले, मैनिफेस्टेशन शब्द का मतलब है कि कुछ पहले से मौजूद है और एक्सप्रेस होने का इंतज़ार कर रहा है। मेन फोकस सीखने वाले की छिपी हुई काबिलियत को मैनिफेस्ट करना है। उनके अनुसार, नॉलेज इंसान में पैदाइशी होती है, बाहरी सोर्स से हासिल नहीं होती। मैनिफेस्टेशन अपने आप होने वाली ग्रोथ को दिखाता है, बशर्ते कोई रुकावट, अगर कोई हो, हटा दी जाए। विवेकानंद ने कहा, 'इंसान जो सीखता है, वह असल में वही होता है जो वह अपनी आत्मा से पर्दा हटाकर खोजता है, जो अनंत नॉलेज का मिक्स है।' स्वामी की एजुकेशन की परिभाषा में अगला ज़रूरी शब्द है 'पहले से ही इंसान में'। इसका मतलब है इंसान का पोर्टेंशियल, जो जन्म से ही जानी-पहचानी या अनजान काबिलियत और टैलेंट की रेंज है। पोर्टेंशियल का मतलब है किसी ऐसी चीज़ को जगाने की संभावना जो सोई हुई हो (प्रभानंद 2003)। स्वामी की एजुकेशन की परिभाषा में 'परफेक्शन' शब्द भी बहुत ज़रूरी है। ग्रीक शब्द 'टेलिक्स' का मतलब है 'परफेक्ट' और यह किसी लक्ष्य या मकसद को पाने का आइडिया बताता है। [2]

इंग्लिश शब्द 'परफेक्ट' का मतलब है पूरा होना या किसी चीज़ का पूरा होना। हम फिर से देख सकते हैं कि सीखने, ट्रेनिंग वगैरह से जुड़ा हर काम एक प्रोसेस का हिस्सा है जो किसी मकसद की ओर जाता है। इन मतलबों को ध्यान में रखते हुए, कोई यह नतीजा निकाल सकता है कि एजुकेशन की भाषा में परफेक्शन इंसान की सबसे बड़ी पोर्टेंशियल को असलियत में लाने का लक्ष्य है। विवेकानंद के अनुसार एजुकेशन अंदर के खुद की खोज है यानी खुद को ज़ाहिर करना। यह किसी व्यक्ति पर बाहरी सोर्स से लिए गए कुछ उधार विचारों को थोपना नहीं है, बल्कि एक नैचुरल प्रोसेस है जो व्यक्ति में सुप्त अवस्था में रहता है। विवेकानंद की शिक्षा योजना की व्याख्या और एनालिसिस इसके कंस्ट्रक्टिव, प्रैक्टिकल और कॉम्प्रिहेंसिव कैरेक्टर को सामने लाता है।

उन्हें एहसास है कि सिर्फ़ शिक्षा से ही आम लोगों का उत्थान मुमकिन है। वह ज़ोर देकर कहते हैं कि अगर समाज को सुधारना है, तो शिक्षा को ऊँचे और नीचे सभी तक पहुँचना होगा क्योंकि व्यक्ति ही समाज का असली हिस्सा हैं। जब इंसान अपनी अंदरूनी आत्मा के प्रति जागरूक होता है तो उसमें इज़्जत की भावना बढ़ती है और यही शिक्षा का असली मकसद है। वह भारत के पारंपरिक मूल्यों को साइंस और टेक्नोलॉजी की तरक्की से आए नए मूल्यों के साथ मिलाने की कोशिश करते हैं। नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के ज़रिए इंसान के बदलाव में ही उन्हें सभी सामाजिक बुराइयों का हल मिलता है। अपनी शिक्षा योजना के ज़रिए, वह जाति, पंथ, राष्ट्रीयता या समय की परवाह किए बिना इंसानियत की नैतिक और आध्यात्मिक भलाई और उत्थान को असलियत में बदलने की कोशिश करते हैं। लेकिन स्वामी विवेकानंद की शिक्षा की योजना, जिसके ज़रिए वे एक मज़बूत देश बनाना चाहते थे जो दुनिया को

शांति और सद्भाव की ओर ले जाए, अभी भी बहुत दूर की बात है। [3]

2. शिक्षा के क्षेत्र में महात्मा गांधी का योगदान

शिक्षा पर गांधी के विचारों का विकास: शिक्षा पर गांधी के विचार पुराने भारत के आत्मनिर्भर गांव सिस्टम से बहुत प्रभावित थे। कई विदेशी हमलों, नए धर्मों के प्रचार और राजघरानों में बदलावों के बावजूद, भारतीय सभ्यता ने अपनी ज़रूरी और बुनियादी संस्थाओं में अपनी निरंतरता बनाए रखी। इसका एक मुख्य कारण यह था कि भारत में सामाजिक जीवन हमेशा गांवों के आस-पास ही बना रहा। गांवों को खेती और कौटुंबिक इंडस्ट्रीज़ से सहारा मिलता था, जो एक आत्मनिर्भर गांव की अर्थव्यवस्था थी। गांधी को हमेशा भारतीय गांवों के आत्मनिर्भर अतीत की बहुत तारीफ़ थी और यह आत्मनिर्भरता उनकी बेसिक एजुकेशन की बुनियादी खासियतों में से एक बन गई। साउथ अफ्रीका में शिक्षा पर अपने विचारों के साथ एक्सपेरिमेंट करने के गांधी के अनुभव ने उन्हें भारत में भी अपने विचारों को पेश करने का बहुत कॉन्फिडेंस दिया। 1904 में गांधी ने साउथ अफ्रीका में फीनिक्स बस्ती बसाई, जिसके नतीजे में उन्हें मशीन की ताकत के बजाय हाथ की ताकत पर विश्वास हुआ, इसलिए आत्मनिर्भरता पर। फीनिक्स बस्ती में सफलता ने गांधी को 1910 में टॉल्स्टॉय फार्म शुरू करने के लिए हिम्मत दी, जहाँ उन्होंने सब कुछ हाथ से काम करके सिखाया। [4]

एक उत्तर आधुनिक गांधी: मर्लो पोंटी और जॉर्ज हर्बर्ट मीड के बाद कंस्ट्रक्टिविस्ट पोस्ट मॉडर्निस्ट, खुद और दूसरे के संविधान को मिलाकर एक रिलेशनल सोशल सेल्फ को फिर से बनाता है जो बौद्ध धर्म में पाए जाने वाले रिलेशनल सेल्फ के सबसे अच्छे पहलुओं को फिर से ज़िंदा करता है। गांधी भी अपने इंडिविजुअलिज़्म को दूसरे संविधान के साथ कालिफ़ाई करते हैं और वह निश्चित रूप से खुद के इस पोस्टमॉडर्न रिक्स्ट्रक्शन में शामिल होते हैं। गांधी का पोस्ट मॉडर्न धर्म सबको शामिल करने वाला है क्योंकि इसमें सच्चाई और अच्छाई चाहने वाले नास्तिकों के साथ-साथ दूसरे धार्मिक लोग भी शामिल हैं, बिना 'पोस्ट मॉडर्न' शब्द का इस्तेमाल किए। हुईयुन वांग गांधी के धर्म को सैक्रामेंट और प्री-प्रीस्ट क्राफ्ट के बजाय सच्चाई और अहिंसा के रूप में डिफाइन करते हैं। दूसरे भारतीय नेशनलिस्ट प्रोग्राम को रिजेक्ट करने के गांधी के कारणों को सबसे अच्छे तरीके से कंस्ट्रक्टिव पोस्टमॉडर्न के रूप में समझा जा सकता है। गांधी ने अपना सबसे ज़रूरी फिलॉसॉफिकल प्रिंसिपल खोजा कि अच्छे मकसद हमेशा अच्छे तरीकों से मेल खाने चाहिए। गांधी का तरीकों और मकसदों का, धर्म और पॉलिटिक्स के अंदरूनी और बाहरी हिस्सों का फ्यूजन न तो प्रीमॉडर्न है और न ही मॉडर्न, बल्कि कंस्ट्रक्टिव सेंस में खास तौर पर पोस्टमॉडर्न है। कंस्ट्रक्टिव पोस्टमॉडर्निज़्म को एक डायलेक्टिकल ट्रायड का नतीजा माना जा सकता है जिसमें मॉडर्निज़्म प्रीमॉडर्निज़्म को नकारता है और फिर रीइंटीग्रेशन के तीसरे स्टेज में कंस्ट्रक्टिविस्ट

पोस्टमॉडर्निस्ट दोनों से वैल्यू लेता है।

रामाश्रय रॉय ने मॉडर्न सिविलाइज़ेशन की गांधी की आलोचना को रेडिकल, यूनिक, ह्यूमनिस्ट और टोटल बताया। गांधी का प्रोग्रेस को इंसान की खुद की खोज के तौर पर फिर से परिभाषित करना मॉडर्न सिविलाइज़ेशन की मेटाफिजिकल नींव को चुनौती देता है और सोशल इंस्टीट्यूशन और इकोनॉमिक अरेंजमेंट्स को ठोस तरीके से फिर से व्यवस्थित करने का प्रस्ताव देता है। रॉय कहते हैं, 'यह सिर्फ वेस्टर्न इंटेलेक्चुअल और फिलॉसॉफिकल सोच की धाराओं के बैकग्राउंड में ही है कि गांधी की यूनिकनेस पूरी तरह से उभरती है। सच की गांधी की लगातार खोज ने उन्हें असलियत की प्लुरलिटी और बाहरी दुनिया से खुद की इंसेपेक्टेबिलिटी का एहसास कराया। इंसान का खुद से और दूसरों से यह लगातार इंटरैक्शन गांधीवादी सोच की पहचान है। [5]

वी.आर. मेहता का तर्क है कि गांधी ने नेशनल आइडेंटिटी के आइडिया को डेवलप करने के लिए वेस्ट और ईस्ट के ट्रेडिशन को सक्सेसफुली सिंथेसाइज़ किया। गांधी का को-हेरेंट विज़न उनके विचार के दो एस्पेक्ट्स को दिखाता है - मॉडर्न सिविलाइज़ेशन की उनकी क्रिटिक और स्टेट, टेक्नोलॉजी और प्रॉपर्टी जैसे मौजूदा स्ट्रक्चर्स के अल्टरनेटिक्स की उनकी खोज। रूडोल्फ और रूडोल्फ ने गांधी को एक पोस्ट मॉडर्न थिंकर के तौर पर पेश किया है। उनका मानना है कि हिंद स्वराज (1909) में गांधी की मॉडर्न सिविलाइज़ेशन की क्रिटिक शुरुआती पोस्ट मॉडर्न टेक्स्ट्स में से एक थी। गांधी की ऑटोबायोग्राफी और उनका सत्याग्रह का एग्ज़िक््यूशन, सच की एक पोस्ट मॉडर्न सिचुएशनल समझ को एक्सप्रेस और एग्ज़िम्पलाइज़ करता है। गांधी ने मॉडर्निज़्म के यूनिवर्सल ट्रुथ्स, ऑब्जेक्टिव नॉलेज और मेटा नैरेटिक्स की हॉलमार्क को एक्सेप्ट करने से मना कर दिया, जिससे उन्हें एक पोस्ट मॉडर्न थिंकर के तौर पर पोज़िशन सिक्वोर हुई। इसके अलावा, इंडस्ट्रियलाइज़ेशन और साइंटिफिक डेवलपमेंट के नेहरूवियन विज़न की गांधी की क्रिटिक को कंटेंपररी इंडिया में अलग-अलग एक्शन ग्रुप्स ने अच्छी तरह से लिया है जो बड़े डैम्स, डेफॉरेशन और मल्टीनेशनल्स के खिलाफ प्रोटेस्ट कर रहे हैं। इन मूवमेंट्स को बड़े पैमाने पर पोस्ट मॉडर्निज़्म का हिस्सा माना जाता है।

3. टैगोर के शिक्षा दर्शन की आधुनिकतावादी और उत्तर-आधुनिकतावादी व्याख्या

रवींद्रनाथ टैगोर हर समय के वर्सेटाइल जीनियस में से एक हैं। वे न सिर्फ़ ऊंचे और गहरे विचारों वाले कवि-फ़िलॉसफ़र हैं, बल्कि एक कवि-एजुकेशनलिस्ट भी हैं। उन्होंने देश की एजुकेशनल प्रॉब्लम के बारे में सोचा और एजुकेशन पर अपने नए आइडिया बताए और भारत में मॉडर्न एजुकेशन की शुरुआत की। एक सबसे सफल क्रिएटिव जीनियस के तौर पर उन्होंने एजुकेशन पर अपने अहम काम को एक छोटे

बच्चों के स्कूल के रूप में आकार दिया, जिसे उन्होंने धीरे-धीरे एक पूरी इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी बना दिया।

टैगोर के एजुकेशन पर आइडिया और उनके एजुकेशनल एक्सपेरिमेंट इतने इमैजिनेटिव और फायदेमंद हैं कि उन्हें ईस्ट का सबसे अहम एजुकेशनिस्ट माना जाता है। रवींद्रनाथ के अनुसार, एजुकेशन का मकसद सेल्फ-रियलाइज़ेशन है। उन्होंने कहा, हर किसी के द्वारा यह रियलाइज़ेशन ही एजुकेशन का लक्ष्य है। टैगोर के अनुसार सेल्फ-रियलाइज़ेशन का मतलब है खुद में यूनिवर्सल आत्मा का रियलाइज़ेशन। इंसान की ज़िंदगी का मकसद इस स्टेटस को पाना है। यह एक ऐसा प्रोसेस है जिसे एजुकेशन के बिना रियलाइज़ नहीं किया जा सकता। उनका मानना है कि हर कोई पोटेंशियली डिवाइन है और हर कोई अपनी पोटेंशियलिटी को रियलाइज़ कर सकता है। उनकी फिलॉसफी 'गीता' और 'उपनिषदों' से बहुत प्रभावित है। सेल्फ-एजुकेशन, सेल्फ-रियलाइज़ेशन पर आधारित है और सेल्फ-रियलाइज़ेशन का प्रोसेस उतना ही परमानेंट है जितना कि एजुकेशन का। [6]

इसमें सबसे ज़रूरी बात यह है कि एजुकेटर को खुद पर और अपनी आत्मा के अंदर मौजूद यूनिवर्सल सेल्फ पर भरोसा होना चाहिए। वह एजुकेटर के लिए हर तरह की पूरी आज़ादी, बुद्धि, फैसले, दिल, ज्ञान, काम और पूजा की आज़ादी में विश्वास करते थे। लेकिन इस आज़ादी को पाने के लिए एजुकेटर को बराबरी, तालमेल और बैलेंस की प्रैक्टिस करनी पड़ती थी। इस प्रैक्टिस से एजुकेटर सच और झूठ, नेचुरल और आर्टिफिशियल, रेलिवेंट और इर्रिलेवंट, यूनिवर्सल और इंडिविजुअल, वगैरह के बीच फर्क करना सीख सकता है।

टैगोर के अनुसार, शिक्षा का मतलब पढ़ने-लिखने की क्षमता नहीं है, यह संस्कृति का हस्तांतरण है। शिक्षा देने की इस प्रक्रिया का मतलब है अतीत की विरासत का ज्ञान, गतिशील वर्तमान में जीने और भविष्य बनाने में शामिल होना। टैगोर एक प्रकृतिवादी और आदर्शवादी भी थे और वह चाहते थे कि करिकुलम में सुंदरता और अच्छे गुणों की चीजें सिखाई जाएं। उन्होंने उन विषयों पर जोर दिया जो बच्चे को ज्ञान से भरपूर और समृद्ध बनाते हैं। वह यह भी चाहते थे कि वे सच्चाई, सुंदरता और अच्छाई की सराहना करें। अलेक्जेंडर और सेलर ने कहा, "करिकुलम में स्कूल द्वारा दिए गए सभी सीखने के मौके शामिल हैं" और ऐसा लगता है कि करिकुलम के प्रति टैगोर का तरीका इस परिभाषा पर बिल्कुल फिट बैठता है। [7]

4. तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा और मूल्यमीमांसा पर टैगोर का दृष्टिकोण

मेटाफ़िज़िक्स: मेटाफ़िज़िकल थ्योरी को समझे बिना एजुकेशन की फ़िलॉसफ़ी को नहीं समझा जा सकता। रवींद्रनाथ की मेटाफ़िज़िकल थ्योरी में, सबसे ज़रूरी आइडिया यूनिवर्सल मैन का कॉन्सेप्ट है। यूनिवर्सल मैन को आखिरी सच्चाई बताते हुए रवींद्रनाथ ने कहा, "सच वह अनंत है जिसका साइंस पीछा करता है, जबकि असलियत अनंत की वह परिभाषा है जो सच को इंसान से जोड़ती है। असलियत इंसानी है, यह वह है जिसके बारे में हम जानते हैं, जिससे हम प्रभावित होते हैं, जिसे हम ज़ाहिर करते हैं।" इस यूनिवर्सल मैन को इंसान अपनी समझ या लॉजिक से नहीं बल्कि सीधे एहसास से जानता है। रवींद्रनाथ के शब्दों में, "सभी रूपों में असलियत हमारे मन के इमोशनल और कल्पनाशील बैकग्राउंड में खुद को दिखाती है। हम इसे इसलिए नहीं जानते कि हम इसके बारे में सोचते हैं, बल्कि इसलिए जानते हैं क्योंकि हम इसे सीधे महसूस करते हैं। यह हमारे कॉन्शियस मन से गायब नहीं है।" यूनिवर्सल मैन यूनिवर्स में सभी मूवमेंट, सभी बदलाव, सभी ऑर्डर और सिस्टम के पीछे है। इंसान उसका एक अहम हिस्सा है। इंसान और प्रकृति को भगवान से अलग नहीं समझा जा सकता। यूनिवर्सल इंसान में दोनों शामिल हैं। यह यूनिवर्सल इंसान हर एक इंसान में है। भगवान ही परफेक्ट इंसान हैं। इंसान एक अधूरे मतलब में इंसान हैं। जबकि इंसान एक अलग भगवान है, भगवान यूनिवर्सल इंसान हैं। टैगोर का मानना था कि, इसी एहसास को शिक्षा का लक्ष्य बनाना था।

एपिस्टेमोलॉजी: एपिस्टेमोलॉजी का सीधा संबंध ज्ञान से है। ज्ञान असलियत के तथ्यों की दिमागी समझ है। टैगोर के अनुसार, ज्ञान आधा-अधूरा होता है, क्योंकि हमारी बुद्धि एक ज़रिया है और यह हमारा सिर्फ़ एक हिस्सा है। यह हमें उन चीज़ों के बारे में जानकारी दे सकती है जिन्हें बांटा और एनालाइज़ किया जा सकता है और जिनके गुणों को हिस्सों में बांटा जा सकता है। लेकिन ब्रह्म परफेक्ट हैं और जो ज्ञान आधा-अधूरा है, वह कभी भी उनका ज्ञान नहीं हो सकता। एक पूरा इंसान बनना टैगोर की शिक्षा का कॉन्सेप्ट था। उन्होंने कभी भी क्लासरूम लेक्चर, रूटीन परीक्षा वगैरह जैसी पारंपरिक शिक्षा में विश्वास नहीं किया। उन्होंने एक ओपन एजुकेशन सिस्टम की वकालत की जो एनवायरनमेंट फ्रेंडली हो, जिसमें सभी तरह के कड़े नियम और कानून न हों। संगीत, पेंटिंग और ड्रामा परफॉर्मेंस वगैरह के मामले में सादगी, खुशी और क्रिएटिव तरीके से खुद को ज़ाहिर करना, स्टूडेंट्स को ज्ञान देने के उनके आदर्श थे। टैगोर का मानना है कि कुदरती माहौल में दी गई शिक्षा दुनिया के साथ अपनापन बढ़ाती है। टैगोर ने कहा कि हर बच्चे में ज्ञान हासिल करने की एक खास क्षमता होती है और सीखने की रफ़्तार भी अलग होती है।

[8]

एक्सियोलॉजी: टैगोर ने सुंदर को बदसूरत से अलग किया, लेकिन उन्होंने हमें सुंदरता की कोई सही परिभाषा नहीं दी। हालांकि, उन्होंने सुंदरता के अपने कॉन्सेप्ट को बताने की कोशिश की है। वह किसी भी चीज़ को पूरी तरह बुरा नहीं मानते। उनके लिए, अच्छाई और बुराई दोनों ही नैतिक उसूल के सिर्फ पहलू हैं। उसी तरह, पूरी तरह मौत जैसा कुछ नहीं है, ज़िंदगी और मौत सिर्फ ज़िंदगी के उसूल के पहलू हैं। इसी तरह, टैगोर का मानना है कि बदसूरती और सुंदरता, सुंदरता के उसूल के पहलू हैं। टैगोर ने कहा कि कला के काम सुंदरता की पहचान हैं, जिनमें पर्सनल टच का मेल उसे यादगार बना देता है। बिना किसी स्वार्थ के खुशी टैगोर के एस्थेटिक्स का खास हिस्सा है। उनके लिए, कला का फ़ायदा यूटिलिटी हो सकता है, लेकिन यह कभी भी उसका मकसद नहीं हो सकता। कला का एकमात्र मकसद खुशी है। अपने नैतिक सिद्धांतों में, टैगोर सभी एक्सट्रीम में तालमेल बिठाना चाहते हैं। उनके लिए सबसे ऊंचे नैतिक आदर्श को पूरे इंसानी स्वभाव को संतुष्ट करना चाहिए। इसलिए, वह नैतिक भेदभाव को इंसानी स्वभाव का एक ज़रूरी हिस्सा मानते हैं। टैगोर का मानना है कि नैतिक विचारों ने सभ्यता के रास्ते पर असर डाला होगा। इसीलिए, इंसान में हमेशा इस बात को लेकर टकराव रहता है कि क्या चाहा जाए और क्या चाहा जाना चाहिए। [9]

5. रवींद्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन, आधुनिकतावादी दृष्टिकोण से

टैगोर सिर्फ एकेडमिक नज़रिए से एजुकेशनिस्ट नहीं थे। टैगोर की एजुकेशन थ्योरी में सिंथेटिक, नेचुरलिस्टिक, एस्थेटिक और इंटरनेशनल कैरेक्टर है। उनका मानना था कि "हमारी सभी प्रॉब्लम के सॉल्यूशन का सबसे चौड़ा रास्ता एजुकेशन है"। टैगोर का एजुकेशनल आइडियलिज़्म पूरे इंसान की खोज पर आधारित है। सिर्फ इंसान ही अपनी पूर्णता की खोज कर सकता है और उसे आखिरकार महसूस कर सकता है। एजुकेशन ज़िंदगी का एक नया पैटर्न डेवलप कर सकती है जिसका नतीजा यूनिवर्सल इंसान की प्राप्ति में होता है। इसलिए, टैगोर का एजुकेशन सिस्टम इंसानी पर्सनैलिटी की ऑर्गेनिक होलनेस पर ज़ोर देता है। जैसे हमारे शरीर के अलग-अलग हिस्से पर्सनैलिटी की होलनेस बनाते हैं, वैसे ही एजुकेशन हमारी पर्सनैलिटी को एक यूनिटी, एक हार्मनी, एक होलनेस देती है जिससे इंसानी ज़िंदगी के इंटेलेक्चुअल, फिजिकल, सोशल, मोरल, इकोनॉमिक और स्पिरिचुअल पहलुओं की परफेक्शन में रिश्तों का कोई अलगाव नहीं होता। इस तरह एक पढ़ा-लिखा इंसान एक इंटीग्रेटेड पर्सनैलिटी बन जाता है। शिक्षा का मतलब समझाते हुए टैगोर ने लिखा है, "वह शिक्षा सबसे ऊँची है जो न सिर्फ हमें जानकारी और ज्ञान देती है, बल्कि हमारे और दुनिया के जीवों के बीच प्यार और भाईचारा भी बढ़ाती है।"

उत्तर आधुनिक दर्शन और टैगोर

पोस्टमॉडर्निज़्म वह फ़िलॉसफ़ी है जो मानती है कि सच मौजूद नहीं है या उसे जाना नहीं जा सकता। सच को कल्चर से रिलेटिव माना जाता है। पोस्ट मॉडर्निस्ट मानते हैं कि सच हर एक कल्चर से तय होता है। सच रिलेटिव होता है, यूनिवर्सल नहीं। अगर सच को हर कल्चर से तय किया जाता है, तो वह असली सच नहीं है। सच अपने नेचर से यूनिवर्सल होता है। सच एब्सोल्यूट होता है। रिलेटिव सच, सच नहीं होता। पोस्ट मॉडर्निस्ट "सच" शब्द को "नज़रिया", "कंस्ट्रक्ट्स" या "पॉइंट्स ऑफ़ व्यू" जैसे शब्दों से बदल देते हैं। यानी वे मानते हैं कि हम सबसे अच्छा यह बता सकते हैं कि अलग-अलग ग्रुप दुनिया को कैसे देखते हैं; लेकिन हम यह नहीं मान सकते कि हमें पता है कि सच क्या है।

मॉडर्न से पोस्टमॉडर्न में बदलाव ने "मेटा नैरेटिव" की जगह "लोकल कॉन्टेक्स्ट और इंसानी अनुभव की डाइवर्सिटी" को ले लिया। मेटा नैरेटिव, मॉडर्निटी की एक खास बात है, जिसमें मॉडर्न साइंस, धर्म, पॉलिटिक्स और कल्चर शामिल हैं।

टैगोर ज़िंदगी और सोच दोनों में अपने समय से आगे थे। टैगोर एक ऐसे इंसान थे जिन्होंने अपने समय के समाज और राजनीतिक उथल-पुथल को महसूस किया और देखा। टैगोर का साहित्यिक जीवन साठ साल से ज़्यादा लंबा था। वह एक बहुमुखी कवि, एक महान छोटी कहानीकार, उपन्यासकार और गीतों के संगीतकार थे। एक प्रतिभाशाली चित्रकार जिनकी पेंटिंग्स में रिप्रेजेंटेशन और एब्स्ट्रैक्ट का मिश्रण था, उन्हें अब वह तारीफ़ मिली है जिसके वे लंबे समय से हकदार थे। उनके निबंध साहित्य, राजनीति, संस्कृति, सामाजिक बदलाव, धार्मिक विश्वास, दार्शनिक विश्लेषण, अंतर्राष्ट्रीय संबंध आदि पर आधारित थे। उनके सभी विषयों से ऊपर, यह उनकी भविष्य बताने वाली दृष्टि और नज़रिया था जिसने उन्हें और उनके कामों को आज के समय में ला खड़ा किया। [10]

कहा जा सकता है कि उनके काम ने मेटाफिजिकल, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में इंसान के सामने आने वाले मुद्दों को एक नया महत्व दिया। टैगोर अपने समय के जीवन में उदार मानवता की भावना भरने में सफल रहे। वह सभी प्रकार की कट्टरता, छोटी सोच, संप्रदायवाद, धर्म, संकीर्णता और हिंसा से ऊपर इंसान के महत्व पर ज़ोर देते हैं। साधना में उन्होंने कहा, "इंसान एक परफेक्ट इंसान बनता है, वह अपनी पूरी अभिव्यक्ति तब पाता है जब उसकी आत्मा खुद को उस अनंत सत्ता में महसूस करती है जो अविह है, जिसका हर सार अभिव्यक्ति है"। वे आगे कहते हैं, "इंसान का यही आखिरी मकसद है, उसे खोजना जो उसका सच है, जो उसकी आत्मा है"। उनके अनुसार, इंसान लगातार बदल रहा है। "इंसान का धर्म" में वे कहते हैं, "धर्म खुद को तभी पाता है जब वह इंसान के अंदर ब्रह्म को छूता है। वरना, उसके होने

का कोई कारण नहीं है"। संक्षेप में उन्हें लगता है कि, "ज़िंदगी इंसान की अपनी पूरी क्षमता को पाने की यात्रा है"। टैगोर का मानना है कि इंसान दो दुनियाओं से जुड़ा है, एक जो उसके अंदर है और दूसरी बाहर। दोनों दुनियाओं को खोजना उसकी मुख्य चिंता बन जाती है। शिक्षा, अर्थशास्त्र, राजनीति, धर्म, सामाजिक जीवन सभी एक ही चिंता की ओर बढ़ने वाले कदम हैं। पोस्टमॉडर्निस्ट मानते हैं कि किसी की भी असलियत तक कभी सीधी पहुँच नहीं हो सकती। असलियत का हर रिप्रेजेंटेशन एक इंटरप्रिटेशन है जो इंसान के एक्सपीरियंस, वैल्यूज़ और नज़रिए से प्रभावित होता है। असलियत की हर डेफ़िनिशन, मतलब की कोई भी पहचान हमेशा एक कंस्ट्रक्ट होती है। कोई एक सच या ज्ञान का कोई एक सही रूप नहीं हो सकता। इंसान का पर्सनल सेल्फ़ अपनी आत्मा के रिलेशन में खुद को मीनिंगफुल बना सकता है। टैगोर का "पूरा इंसान" पर ज़ोर उनकी सोच की एक ज़रूरी बात है। [11]

6. आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता और उसके बाद के काल के संदर्भ में टैगोर के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता

टैगोर मॉडर्न इंडिया के रेनेसां मैन थे – भारतीय कल्चरल ट्रेडिशनल एजुकेशन सिस्टम के बीच एक पुल। एक राइटर होने के साथ-साथ, वे एक फिलॉसफर, म्यूजिशियन और पेंटर होने के साथ-साथ एजुकेशन में पायनियर भी थे। टैगोर ने अपनी एजुकेशनल फिलॉसफी खास तौर पर नहीं लिखी। वे उनकी राइटिंग और शांतिनिकेतन में किए गए एजुकेशनल एक्सपेरिमेंट में बिखरे हुए हैं। उन्होंने नेचर को असली टीचर के तौर पर देखा, लेकिन दुनिया के कल्चर से जुड़ी, मज़ेदार लर्निंग पर आधारित और बच्चे की पर्सनैलिटी के हिसाब से पर्सनलाइज़्ड (त्रिपाठी, मिसेज वंदना, 2011)।

टैगोर ने एजुकेशन के लिए किसी खास एजुकेशनल थ्योरी पर ज़ोर नहीं दिया, लेकिन इंडियन कॉन्टेक्ट में एजुकेशन का उनका प्रिंसिपल है - "सभी एजुकेशनल प्रोसेस हमारी अपनी कल्चरल ट्रेडिशन पर बेस्ड होने चाहिए"। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि इंस्ट्रक्शन का मीडियम "अपनी मदर-टंग" होना चाहिए। टैगोर का स्कूल का कॉन्सेप्ट गुरुकुल सिस्टम पर बेस्ड था। उन्होंने बच्चों के नेचुरल एनवायरनमेंट में सीखने को बहुत इंपॉर्टेंस दी और कहा कि नेचर खुद हमारी सबसे बड़ी टीचर है। टैगोर का मानना था कि एजुकेशनल प्रोसेस सेल्फ-डिस्कवरी और फ्री क्रिएशन का होना चाहिए। टैगोर की एजुकेशनल फिलॉसफी का मूल नेचर, म्यूजिक और लाइफ से सीखना था। यही वजह है कि उनकी एजुकेशन इंसानी दिमाग को आसानी से एक्सेप्टेबल है। रवींद्रनाथ टैगोर के अंदर के विजनरी और उनके अंदर के महान एजुकेशनलिस्ट ने आज की प्रॉब्लम को एक सदी पहले ही सॉल्व कर दिया था। मॉडर्न एजुकेशन की प्रॉब्लम हैं अटेंडेंस, दूसरे गलत तरीकों का इस्तेमाल और डिसिप्लिन वगैरह। यह ज़्यादा सर्टिफिकेट पर फोकस्ड है, इंटेलिजेंस और नेचर के साथ कोरिलेशन को इर्रैलेवंट बनाती है। टैगोर ने इन प्रॉब्लम को

बड़े तरीके से सॉल्व किया। क्लास में प्रीडम ने अटेंडेंस की प्रॉब्लम को सॉल्व किया, इनविजिलेटर की एब्सेंस ने कॉपी करने या गलत तरीकों के इस्तेमाल को सॉल्व किया। इस तरह, टैगोर का एजुकेशन सिस्टम एक बड़ी अचीवमेंट है। अफसोस है कि हमने टैगोर के सजेस्टेड फॉर्मूलों को अप्लाई करने की कोशिश नहीं की। [12]

7. निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद, रवींद्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी का योगदान मिलकर भारत में मॉडर्न और पोस्टमॉडर्न दौर में एजुकेशनल फिलॉसफी के एक रिच और डायनैमिक डेवलपमेंट को दिखाता है। विवेकानंद का अंदरूनी ताकत, नैतिक एम्पावरमेंट और अंदरूनी दिव्यता के विकास पर ज़ोर, वैल्यू-बेस्ड मॉडर्न एजुकेशन के लिए एक मज़बूत फिलॉसॉफिकल बेस देता है। टैगोर का ह्यूमनिस्टिक, एस्थेटिक और नेचर-ओरिएंटेड अप्रोच मैकेनिकल स्कूलिंग का एक ऑप्शन देता है, जो लर्नर ऑटोनॉमी, कॉन्टेक्टुअल नॉलेज और कल्चरल डाइवर्सिटी जैसी पोस्टमॉडर्न चिंताओं का अंदाज़ा लगाता है। गांधी की एजुकेशनल फिलॉसफी—जो सच, अहिंसा, सेल्फ-रिलायंस और कम्युनिटी लिविंग पर आधारित है—एक कंस्ट्रक्टिव पोस्टमॉडर्न नज़रिए को दिखाती है जो इंडस्ट्रियल प्रोग्रेस के हावी मॉडल्स को चुनौती देती है और एथिकल, एक्सपीरिएंशियल लर्निंग को बढ़ावा देती है। हालांकि अलग-अलग बैकग्राउंड से आने के बावजूद, तीनों विचारकों ने एक ऐसा एजुकेशनल सिस्टम डेवलप करने की कोशिश की जो पूरे इंसान को—इंटेलिजेंटली, मोरली, सोशली और स्पिरिचुअली—पकाए। उनके आइडिया आज भी बहुत काम के हैं, जो मॉडर्न एजुकेशन के बढ़ते मैटेरियलिज़्म, फ्रैगमेंटेशन और स्ट्रेस का मुकाबला करने के रास्ते बताते हैं। उनकी सोच को आज के काम में शामिल करने से भारत और दुनिया के लिए ज़्यादा इंसानी, सबको साथ लेकर चलने वाला, सांस्कृतिक रूप से जुड़ा और पूरी तरह से शिक्षा का ढांचा बनाने में मदद मिल सकती है।

संदर्भ

1. ब्लेक, निगेल. 2019. 'पीस एजुकेशन एंड नेशनल सिक्योरिटी'. जर्नल ऑफ़ फिलॉसफी ऑफ़ एजुकेशन. 19(1):27-38.
2. कैलेजा, जोआचिम जेम्स. 2022. 'ए कांटियन एपिस्टेमोलॉजी ऑफ़ एजुकेशन एंड पीस: एन एग्जामिनेशन ऑफ़

3. कॉन्सेप्ट्स एंड वैल्यूज़'. अनपब्लिशड PhD थीसिस. यूनिवर्सिटी ऑफ़ ब्रैडफ़ोर्ड. डिपार्टमेंट ऑफ़ पीस स्टडीज़.
4. डेवी, जॉन. 2018. द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ़ जॉन डेवी, 1882-1953. एडिटेड जो एन बॉयडस्टन.
5. गैल्टुंग, जोहान. 2020. पीस: रिसर्च, एक्शन, एजुकेशन. एसेज़ इन पीस स्टडीज़: वॉल्यूम 1. कोपेनहेगन: एजलर्स. EPR1 के तौर पर बताया गया।
6. गुर-ज़ीव, इलान. 2021. 'पोस्टमॉडर्न युग में शांति शिक्षा की फिलॉसफी'। एजुकेशनल थ्योरी।51(3):315-336.
7. पेज, जेम्स एस. 2022. 'शांति शिक्षा: कुछ फिलॉसॉफिकल फाउंडेशन की खोज'। इंटरनेशनलरिव्यू ऑफ़ एजुकेशन। 50(1):3-15; ऑनलाइन उपलब्ध है <http://eprints.qut.edu.au/archive/00003650/>.
8. पेज, जेम्स एस. 2018. शांति शिक्षा: नैतिक और फिलॉसॉफिकल फाउंडेशन की खोज। शार्लेट: इन्फॉर्मेशन एज पब्लिशिंग। वेबसाइट, इंटरनेट
9. कुरियाकोस, के. (1995). *महात्मा गांधी की शैक्षिक दर्शन का संयुक्त राष्ट्र के साक्षरता कार्यक्रम में अर्थ और उपयोग*. एजुकेशन.
10. पाठक, आर. पी. (2012). *शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धांत*. डोरलिंग किंडरस्ले, पियर्सन एजुकेशन इंडिया.
11. प्रथापन, सुप्रिया. (2014). *स्वामी विवेकानंद की शिक्षा की दर्शनशास्त्र (शिक्षा की दार्शनिक नींव)*. फिलोसोपन.
12. रादर, ए. आर. (2007). *शिक्षा का सिद्धांत और सिद्धांत*. डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस.